कविता पाठ में वरिष्ठ कवि का सानिध्य

मुख्य अतिथि कवि

वरिष्ठ कवि मा. कर्मशील भारती

संपर्क

9968297866

ई-मेल:

bhartikaramsheel355@gmail.com

शब्द और विचार

शब्द किसी के
बाप की बपौती नहीं है
शब्द-शब्द है
वस्तु और उसकी अभिव्यक्ति के
प्रवक्ता शब्द
तुम्हारे और हमारे बीच का
अंतर मिटा देते हैं
अंतर भी कर देते हैं अत्यधिक
कभी-कभी
विचार किसी सेठ की
तिजोरी में बंध धन नहीं है
विचार जो शब्दों में गढी गई
किसी कविता की
विशिष्टतम पंक्तियां हैं
तो कभी-कभी
निकृष्टतम भी
वह विचार ही तो है
जो रामचरित मानस में लिखे गए है
तुलसीदास ने शब्द ही तो दिये
ढोल गंवार शूद्र पशु नारी
सकल ताड़ना के अधिकारी
भर दिया मानस ने जन मानस में
नारी के प्रति अलगॉव
यह जानते हुए भी
नारी उसकी मां भी है
बहन भी पत्नी भी और बेटी भी
यह जानते हुए भी
नारी संपूर्ण विश्व की जननी है
संपूर्ण विश्व का आधा-हिस्सा
वह भी विचार हैं
संविधान में जो
कानून बना दिए गए
भाषा लिंग और नस्ल के आधार पर
किसी के साथ भी बढ़ता नहीं
जाएगा भेदभाव
बरतेगा का जो दंड पाएगा
वह भी शब्द हैं
कहे थे जो कार्ल मार्क्स ने
दुनिया दो वर्गों में बांटी है
एक पूंजीपति दूसरा पूंजी विहीन
दुनिया के मजदूर एक हो जाओ
शोषण अन्याय रुकना है तो
क्रांति करनी होगी
खून बहाना होगा
तभी तुम्हें तुम्हारा अधिकार मिलेंगे
तो गौतम बुद्ध ने कहा
अहिंसा करुणा और त्याग
गौतम बुद्ध ने आगे कहा
मारना है तो मरो
स्वार्थ और अति महत्वाकांक्षाओं
को
पूर्वाग्रह और कुत्सित विचारों को
भाव जब हृदय की चौखट पर
करते हैं दस्तक
हृदय की छटपटाहट तब
तोड़कर दरवाजा आती है बाहर
तब आधारों पर अनायास ही
शब्द फुट पड़ते हैं
कलमबद्ध हो विचार बन जाते हैं
वह भी तो विचार ही हैं
शब्द बन कानों में
गुंजा करते हैं रात दिन
खय्याम की धुन पर शैलेंद्र के गीत
बरसते हैं मिठास हृदय में
वह भी तो विचार ही है
तना बन चूके हैं जो
किसी पड़ोसी या अपनों के द्वारा
थोड़ी-सी बात पर दी गई
अभद्र गालियों के रूप में
हृदय में जहर भर देते हैं
और यह भी तो शब्द है जो
कविता में ढालकर
मैं सुन रहा हूं आपको
अनायासी आकर्षित कर रहा हूं
आपको
शब्द और विचार किसी का मन
न आहत करें ऐसा संकल्प करें
शब्द और विचार बन सके
किसी की प्रेरणा ऐसी रचना रचे
ऐसे गीत लिखे ऐसी कविता लिखें
शब्द किसी के बाप की बपौती
नहीं है।

मजूरन

वह
प्रतिदिन निकल जाती है घर से

भोर होने के साथ-साथ
लेकर हाथ में
एक बड़ा-सा चुंबक
लटकाए कंधे पर
एक लंबी-सी झोली
पीठ पर लटकाए
अपने जिगर का टुकड़ा
लिपटा है जो कपड़े की
एक और झोली में
खोजती है विनती है लोहा
दोनों हाथों से
रेत से कचरा से
गलियों में सड़कों पर
कूड़े के ढेर से
खराब की स्कूटर की
मोटर की दुकानों के आसपास
पहने हुए कपड़े मैले से
ओढ़ चुनर भी वैसी ही
वह
उदास भी नहीं है
अपनी मेहनत के प्रति
निराशा भी नहीं है कल के लिए
ठीक भी नहीं मांगती है
सड़कों पर भिखारी की तरह
चोरी भी नहीं करती है
घूसखोरी भी नहीं करती है
दफ्तर में अफसर की तरह
बेईमानी भी नहीं करती है
दुकान में बैठे किसी लाल की तरह
बोलती नहीं है झूठ भी
तथाकथित राजनीतिज्ञों की तरह
इतिहासकारों की तरह
भेजते नहीं है अपना जिस्म भी
वेश्याओं कॉल गर्ल की तरह
वह
आश्वस्त है अपने कल के लिए
जो लटका है उसकी पीठ पर
भयभीत भी नहीं है वर्तमान से
पड़ा है जो चारपाई पर
उसके घर अपाहिज
हुआ था शिकार एक भयंकर
विस्फोट का
मजूरन
आंखों में लिए हुए
रोशनी कल की
खोजती है बिनती है लोहा
निरंतर
बहते हुए नदी के जल की तरह।

पीड़ा

अस्पताल में
प्रसूति गृह के बिस्तर पर
लेटी सुमन
असहाय प्रसव पीड़ा से पीड़ित
जीवन और मृत्यु से संघर्षरत
चिल्लाती है बार-बार
नर्स बहन जी डॉक्टर साहब को
बुलाओ
इस मृत्यु दायक पीड़ा से
मुझे जैसे भी हो
मुक्ति दिलाओ
वह कभी पुकारती है
मां ओ मेरी मां
कितनी देर और सहनी पड़ेगी
यह पीड़ा
अब तो पीड़ा सहन करने का
साहस भी
नहीं है मुझ मैं
मगर कोई नहीं सुनता
उसकी चीख पुकार
डॉक्टर अपने काम में व्यस्त
नर्स भी प्रतिदिन की
दिनचर्या में अभ्यस्त
वहीं दूसरी और खड़े थे
परिवार जन और संबंधी
कुछ मन में
कुछ धीरे-धीरे बोल रहे थे
पोता हो जाए?
बेटा हो जाए?
वंश चलाने को
कुल की परिवार की
पिता की दादाजी की
प्रतिष्ठा बढ़ाने को
विवश पड़ी अस्पताल के बिस्तर पर
मासूम सुमन का
रोना और रह-रहकर पुकारना
मां! मां ओ मेरी मां!
उन्हें कब अच्छा लगता था
रही वेदना हर स्त्री सह लेती है
यह प्रसव वेदना
कहकर सब शांत बना देते हैं
वहीं तीसरी और खड़ी थी
मां उसकी
संघ पिता भी भाई भी
सबके मन में एक लगन थी
नाती केवल नाती हो तो
कितना अच्छा हो
नाई की साथी आ गई तो
जीवन और भी बस बनेगा
सुमन असहाय थी
बिस्तर पर पड़ी हुई
जूझ रही थी
मृत्यु से जीवन से
पल पल प्रतिपल
कभी सांस थामती सी लगती
कभी रक्त धमनियों में चलता
और कभी लगता थमता सा
वहीं खड़ा खड़ा कोई सोच रहा था
क्यों नहीं सोचता कोई?
सुमन दीर्घायु हो
सुमन अपने घर जल्दी लौट
पीड़ा तो दोनों की पीड़ा

लड़की जन्मे लड़का जन्मे
एक समान एक तरह की
पीड़ा है
वह केवल पीड़ा है
कष्टप्रद है
बहुत दुखद है।
जाति से तौबा
वह
जन्म था जब
मनुष्य था
कुछ भी नहीं था उसके पास
माथे पर अहंकार का वैदिक तिलक
न शरीर पर
किसी श्रेष्ठ का जनेऊ
ना सर पर किसी साहिब ग्रंथी
पगड़ी
ना बर्बर आदिम काल की पशुता
का खतना
ना गले में लटका
किसी प्रकार की विवशता का क्रॉस
वह मनुष्य था
मेरा कोड़ा मनुष्य
वह नहीं जानता था
कोई धर्म वर्ण जाति और लिंग
भाषा और विभेद
अब उसे सिखानी थी मानवता
सीखना था
मनुष्य होने का सार्थक अर्थ
बचपन में ही उसे
घुट्टी में पीला-पीलाकर
द्वेषपूर्ण जातिवाद का
कुसंस्कारों के द्वारा
मस्तिष्क में भर दिया गया
दूसरों के प्रति दुराव
हुंडई कम कमांडो और वैज्ञानिक
आडंबरों ने बना दिया
उसे मानसिक रूप से दीन-हीन
असामाजिक
बना दिया उसे
कट्टर जातिवादी
पूर्ण वैज्ञानिक
मानवता का घोर विरोधी
बन गया वह समाज और राष्ट्रद्रोही
बन गया वह
अन्याय का पक्षधर
शोषण और अत्याचार्यों के समक्ष
घुटने टेकू संस्कृति का समर्थक
यानी जातिवादी हिंदुस्तानी
धत् तेरी जाति की ऐसी की तैसी
तौबा ऐसी जाति से तौबा ।
मनुष्य ही नहीं बनने दिया
जाति से तौबा
जाति से तौबा

मानवता नहीं है जिसमें

मुझे
मनुष्य कहने मानने समझने मे
आज तक
अवहेलना संकोच करता रहा
वह
सदियां बीत गई
मार खप गई
मेरी भी असंख्य पीढ़ियां
इस सवाल को
समझने सुलझाने में
मुझे
मनुष्य क्यों नहीं समझता मानता
वह
क्यों नहीं मानवता का व्यवहार
करता
मेरे साथ वह
मेरी पीढ़ियां और मैं
बार-बार सोचती और समझती रही
इस सवाल का उत्तर
उसके पास है शायद
पर मै गलत था
स्वयं नहीं समझ पाया
जो मानवता
मनुष्य होने का सही अर्थ
समझ नहीं पाया जो सामाजिकता
सामाजिक प्राणी होने का अर्थ
समझ नहीं पाया जो राष्ट्रीयता
राष्ट्र प्रेमी होने का सच्चा अर्थ
समझ नहीं पाया समाज
और उसकी सामाजिकता
संवेदनाएं
समाज में रहने का अर्थ
बन गया वह निरा जातिवादी
बन गया वह असामाजिक
मानव और राष्ट्र विरोधी
एक बीमार मानसिकता की सुरंग में
घूमता हुआ मनुष्य
मनुष्य होते हुए भी
मानवता नहीं है उसमें
मैं कहता हूं मानता हूं और सलाह
देता हूं
तू मनुष्य तो बन
सीख मानवता
मानवता का सही अर्थ
समझ और सीख
बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का
सामाजिक अर्थ।

चुप ठीक नहीं था

पहली बार
किसी ने जब मुझे
हरिजन कहा था

नोज क्यों नहीं लिया था
मैंने उसका मुंह
खींच क्यों नहीं ली थी
मैंने उसकी जुबान
पहली बार
किसी ने जब मेरी
बहन पत्नी बेटी पर
डाली थी बुरी नजर
चीर क्यों नहीं दी थी मैंने
अपनी टांग पर रखकर
उसकी टांग
पहली बार
किसी ने जब जलाया था
खून पसीने और ईमानदारी से
कमा कर
बनाया हुआ घर
मैंने कर क्यों नहीं दिया था
उसका सर
धड़ से अलग
फाड क्यों नहीं दी थी मैंने
उसकी छाती
मैंने निकल क्यों नहीं दी थी
उसकी सारी अनतड़िया
पेट से बाहर
क्यों रह गया मैं चुप?
क्यों पी गया था?
अपमान, अन्याय, शोषण, अत्याचार
के घूंट
क्यों देखता रहा
वह सब अपनी आंखों से
मेरी शालीनता-सहनशीलता को
उन्होंने कायरता समझा
कर दिया मुझे
अस्तित्वहीन-साधनहीन संपत्ति और
विद्याहीन
मैं अब कल को नहीं दोहराने दूंगा!
मुझे अब किसी भी तरह का
चुप सहन नहीं है?
मैं लडूंगा अब
चुप रहने वाले उसे स्वभाव से भय से
मैं धार दूंगा अपने अस्त्र शस्त्रों को
प्रतांचा चढ़ाऊंगा अपने तीरों पर
शंखनाद करूंगा
इस अन्यायपूर्ण-भेदभावपूर्ण
अमानवीय और दमनकारी व्यवस्था
के विरुद्ध
मैं कर नहीं हूं
मैंने संगठित किया है बचाया है देश
महान योद्धा चंद्रगुप्त मौर्य बनकर
मैंने फैलाया है धम्म
मानवता के संदेश को
शांति दूत सम्राट अशोक बनकर
जुड़ा है सारा समाज
विश्व रतन बाबा साहेब डॉक्टर
आंबेडकर बनकर
मुझे अब किसी भी तरह का चुप
सहन नहीं है।

वर्ण व्यवस्था

हज़ारों वर्ष पहले
भारतीय समाज में ब्राह्मणों द्वारा
अपना वर्चस्व और तथा कथित
श्रेष्ठता शुद्धता पवित्रता
घोषित कर मनवाने का
एक भयंकर षड्यंत्र
रचा गया था
वर्ण व्यवस्था
इसके अंतर्गत
पहले वर्ण और फिर
जातियों में बांटकर
सारे समाज को
गूंगा बहरा और पंगु बनाकर
स्थापित किया गया था
वर्ण व्यवस्था को
जायज बताते हुए
इन ब्राह्मणों ने
कुतर्क करना शुरू कर दिया
स्याह को श्वेत करना
श्वेत को स्याह करना
उनके स्वभाव में
शामिल है आज तक।
इस वर्ण व्यवस्था में
प्रत्येक व्यक्ति को
कुछ और निम्न के
कोढ से ग्रसित
एक मानसिक रोगी
बना दिया गया
इस वर्ण व्यवस्था ने
समाज के कुछ
निठल्ले निकम में लंपट
और धूर्तों को
मुफ्त की खाने वालों को
विशेष अधिकार दिए
शास्त्र सम्मत करार दिया
शेष बहुत-जन समाज पर
अशुद्ध अपवित्र और नीचे होने का
बोझ ला दिया गया
इस वर्ण व्यवस्था का
विरोध करने वालों का
संहार